वार्तालाप 569 लखनऊ दिनांक 21.5.08

Disc.CD-569, dated 21.5.08 at Lucknow
Extracts-Part-1

समय 00.01-00.41

जिज्ञासु: बाबा, गंगा, यमुना, सरस्वती, ब्रह्मपुत्रा का तो पता है, गोमती का क्या पार्ट है?

बाबा: गोमती जिसकी मती कैसे हो? गऊ की तरह मति हो। गऊ कैसे बुद्धि वाली होती है? सीधी- साधी होती है, भोली-भाली। तो जिसकी बुद्धि भोली-भाली हो। गोमती नदी कौनसे नदी में जाके मिलती है? अरे! गंगा नदी में मिलती है।

Time: 00.01-00.41
Student: Baba, we know about Ganga, Yamuna, Saraswati, Brahmaputra; but what is the part of Gomati?
Baba: Gomti; the one whose intellect is like what? The intellect (*mati*) is like a cow (*gau*). What kind of an intellect does a cow have? It is simple, innocent. So, the one whose intellect is innocent. In which river does the river Gomati merge? *Arey*! It merges with the river Ganga.

समय 2.08-12.18

जिज्ञासु: बाबा, यज्ञ के आदि में... बाबा ने बोला है जब मैं आता हूँ तो तीन मूर्तियों के साथ आता हूँ।

बाबा: हाँ, जी।

जिज्ञासु: तो त्रिमूर्ति में छोटी मम्मी, बड़ी मम्मी, और रामवाली आत्मा तीन हो गये। दादा लेखराज कृष्णवाली आत्मा...

बाबा: वो कहाँ तीन मूर्तियों में?

जिज्ञासु: मूर्ति साकार में कहा जाता है ना।

बाबा: हाँ, मूर्ति तो साकार में कहा जाता है। तो साकार में मूर्ति तीनों नहीं थी यज्ञ के आदि में?

जिज्ञासु: तो चार हो गए ना।

बाबा: चार मूर्तियाँ थीं? माना जब प्रजापिता के द्वारा सुनाया गया, ज्ञान का बीजारोपण किया गया तो उस समय तीन मूर्तियाँ थीं, या चार मूर्तियाँ थीं?

जिज्ञासु: दादा लेखराज वाली आत्मा।

बाबा: दादा लेखराज वाली आत्मा भी उस समय मौजूद थी? ये तो तुमने बात बना ली अपने अंदर से। इसको कहते हैं मनमत, अनुमान। ये तुम्हें कहीं लिटरेचर में ये बात मिली....

जिज्ञासु: नहीं, नहीं ये तो हमारा...।

बाबा: तो ऐसा क्यों करते हो? अनुमान से नुक्सान हो जाता है। अनुमान से कोई बात धारण नहीं करनी है।

Time: 2.08-12.18
Student: Baba, in the beginning of the *yagya*.... Baba has said, when I come I come with the three personalities (*murti*).
Baba: Yes.
Student: So, in the three personalities [there is] the junior mother, the senior mother, and the soul of Ram; these are the three [personalities]; Dada Lekhraj, the soul of Krishna....
Baba: Is he included among the three personalities?
Student: A corporeal one is called a personality.
Baba: Yes, a corporeal one is called a personality. So, were there not the three personalities in the corporeal form in the beginning of the *yagya*?
Student: There were four [personalities], weren't there?
Baba: Were there four personalities? It means that when [the knowledge] was narrated through Prajapita, when the seed of knowledge was sown, were there three personalities or were there four personalities?
Student: The soul of Dada Lekhraj.
Baba: Was the soul of Dada Lekhraj also present at that time? You have guessed on your own. This is called the opinion of the mind (*manmat*), a guess. Did you find this anywhere in the literature...
Student: No, no this is my...
Baba: So, why do you do so? Guessing leads to harm. You should not accept anything on the basis of guesses.

जब शिव बाप आते हैं परमधाम से, उस समय तीन ही मूर्तियाँ होती हैं जो आपस में मिलती हैं। ब्रह्मा के द्वारा ज्ञान सुनाया गया, कौनसा ज्ञान सुनाया गया? भक्तिमार्ग का, साक्षात्कार का। वो साक्षात्कार का ज्ञान सुनाने वाला मौजूद था। स्त्री चोले में था, या पुरुष चोले में? स्त्री चोले में था। सुनाने वाले ने सुनाया, सुनने वाले ने सुना। सुनना और सुनाना एक साथ होता है, या अंतर होता है? एक ने सुनाया दूसरे ने उसी समय सुना, और उसके साथ ही साथ समझ में आ सकता है कि नहीं आ सकता है? सुनाने वाले ने सुनाया, सुनने वाले ने सुना और सुनाने सुनने के साथ ही उसकी बुद्धि में बात बैठ गई। बिठाने वाला कौन था? शिव बाप। जो सुनने वाला व्यक्तित्व है उसने समझा। पहले समझा, या तीनों मूर्तियों ने साथ2 समझा? पहले जिसने सुना तीनों मूर्तियों के बीच में, उसने समझा भी, सुना भी, और समझा भी। फिर सुनाया। तो सुनने वालों में कौन2 थे? सुनने वालों में एक था सुनाने वाला प्रैक्टिकल में, जिसमें दो आत्मायें थी। एक वो जो समझाने वाला था, एक वो जो इस सृष्टि रुपी रंग मंच पर पहले2 समझने वाला है।

When the Father Shiva comes from the Supreme Abode, there are only three personalities who meet each other. Knowledge was narrated through Brahma; which knowledge was narrated? [The knowledge] of the path of *bhakti*; of visions. The narrator of the knowledge of visions was present. Was he in a female body or in a male body? He was in a female body. The narrator narrated, the listener listened. Does listening and narrating take place simultaneously or is there any gap? One narrated and the other one listened simultaneously; and can he understand simultaneously or not? The narrator narrated; the listener heard and along with narrating and

listening, the topic sat in his intellect. Who enabled [the topic] to sit [in his intellect]? The Father Shiva. The person who listened understood it. Did he understand first or did all the three personalities understand simultaneously? The one who listened first among the three personalities understood it as well; he heard as well as understood. Then he narrated. So, who all were involved in listening? Among the listeners, one was the person who narrated in practice; the one in whom two souls were present. One was the explainer [and] the other was the one who understands first of all on this stage like world.

तीन मूर्तियों में से एक मूर्ति प्रजापिता की, भागीदार की, वो थी, जिसने पहले2 सुना, और सुनने के साथ ही समझा भी और समझने के साथ2 उन बातों को पहले2 सुनाया भी और समझाया भी। लेकिन उस भागीदार में दो आत्मायें मौजूद थी। समझने वाला तो भागीदार है, लेकिन समझाने वाला कौन है? सुप्रीम सोल शिव। वो ज्ञान का बीज है। लेकिन ज्ञान के बीज को डालने वाला निमित्त कौन? निमित्त साकार को कहा जाता है, तो वो प्रजापिता हुआ। उस प्रजापिता ने उस बीज को धरणी में डाला। तो जिस धरणी में डाला, वो धरणी एक है, या दो है? (किसीने कहा-धरणी एक है।) धरणी एक ही है? एक होता है चैतन्य, और एक होता है जड़। प्रकृति को कहेंगे जड़ और उसको पॉवर देने वाली है आत्मा चैतन्य। तो धरणी तो दो हैं, लेकिन उनमें धारणा शक्ति वाली कौनसी है? चैतन्य। वो कौन? छोटी माँ है धारणा शक्ति वाली। जितनी जन्म-जन्मांतर की प्यूरिटी होगी, गोरा पार्ट होगा, अव्यभिचारी पार्ट होगा उतनी धारणा शक्ति भी जास्ती होगी। कोई जरुरी नहीं है कि जो धारण करे वो बाहर भी उगल दें। जरुरी है? नहीं। कोई बोल2 करने वाले बहुत होते हैं। माताओं में तो अक्सर ये बात होती है, जो बात सुनी फट से बाहर निकाल दी। फिर कोई मातायें ऐसी भी होती हैं कि पहले बात को अच्छी तरह ऑब्जर्व करना, फिर बाहर निकालना।

Among the three personalties, one personality was Prajapita, the partner who heard first of all and he also understood while listening and along with understanding, he also narrated those topics first of all and he explained it as well. But there were two souls present in that partner. The one who understands is the partner, but who is the one who explains? The Supreme Soul Shiva. He is the seed of the knowledge. But who is instrument in sowing the seed of knowledge? The corporeal is called an instrument; so that is Prajapita. That Prajapita sowed that seed [of knowledge] in the land. So, is the land in which he sowed the seed one or two? (Someone said: the land is one.) The land is only one? One is living (*chaitanya*) and the other is inert (*jar*). Nature will be called inert. And the one who gives power to it is the living soul. So, the lands are indeed two, but which of them has the power of assimilation (*dhaarnaa shakti*)? The living one; who is that? The junior mother (*choti ma*) is the one with the power of assimilation. The more purity of many births someone has, the fairer the part, the more unadulterated the part is, the more power of assimilation it will have. It is not necessary that the one who assimilates will also speak about it. Is it necessary? No. Some speak a lot. It is often seen among mothers; whatever they hear, they divulge (reveal) it immediately. Then there are a few such mothers also who *observe* something carefully and then speak about it.

तो माताओं में दो प्रकार की मातायें हैं। एक है भारतमाता और एक है जगतमाता। जो भारतमाता है उसमें प्यूरिटी की पॉवर ज्यादा होगी, या जगतमाता में ज्यादा प्यूरिटी की पॉवर होगी? (सभी-भारतमाता में।) क्यों? जगतमाता तो और बड़ी माता है, उसमें तो ज्यादा प्यूरिटी होनी चाहिए।

जिज्ञासु: उसमें सभी धर्मों के संस्कार हैं।

बाबा: हाँ, सभी धर्मों के जो बच्चे हैं उनके संग का रंग लगता है। इसलिए वो व्यभिचारी बुद्धि हो जाती है। है तो बड़ी माता, जगतमाता। लेकिन संग का रंग अनेकों का लगता है। और भारतमाता को? सिर्फ भारतवासियों का ही संग का रंग लगता है। जिसके लिए अव्यक्त वाणी में बोला है भारतमाता शिवशक्ति अवतार अंत का यही नारा है ये पहली अ.वा. में अंत में ये बात बोली हुई है। तो वो अंत में आती है, तीसरी शक्ति, या पहले ही पहले प्रत्यक्ष हो जाती है? जो आदि में.... (सभी-सो अंत में।) तो समझने में भी वो आदि में होगी, भले मुँह से बात बाहर नहीं निकाली, लेकिन समझने में भी वो आदि में थी, और अंत में भी प्रत्यक्ष हो जाती है। इसलिए दो मातायें थी। एक भारतमाता, एक जगतमाता।

So, there are two kinds of mothers. One is the Mother India (*Bharat Mata*) and the other is the World Mother (*Jagat mata*). Will the Mother India have more power of purity or will the World mother have more power of purity? (Everyone said: Mother India.) Why? The World Mother is a more senior mother; she should have more purity.

Student: She has the *sanskar* of all the religions.

Baba: Yes, she is coloured by the company of the children of all the religions. This is why her intellect becomes adulterous (*vyabhichari*). She is no doubt the senior mother, the world mother, but she is coloured by the company of many. And what about the Mother India? She is coloured only by the residents of India (*Bharatwasis*) for whom it has been said in the *avyakta vani: Bharat mata shivshakti avatar ant ka yahi nara hai* (Mother India the incarnation of *Shivshakti* is the very slogan of the end). This has been said in the first *avyakta vani* in the end. So, does she, the third *shakti*[1] come in the end or is she revealed in the beginning itself? As is the beginning.... (Everyone: so shall be the end.) So, she will be involved in understanding in the beginning as well, although she did not speak up, she was involved in understanding in the beginning and she is revealed in the end as well. This is why there were two mothers. One is the Mother India and the other is the World Mother.

तीन मूर्तियाँ थीं। एक है चैतन्य, एक है जड़त्वमई। जड़त्वमई का नाम अव्यक्त वाणी में दे दिया, प्रकृति इस समय दोनों हाथों में झाड़ू लेकर के खड़ी है। उसका पार्ट क्या है? विनाशकारी पार्ट है। और पालनाकारी पार्ट किसका है? छोटी माता, भारतमाता का पार्ट है पालन करने का पार्ट। क्योंकि भारत में ही देवात्माओं की पालना होनी है। फिर स्थापना का पार्ट किसका है? ज्ञान बीज का स्थापना करने वाला कौन निमित्त हुआ? अरे, स्थापन करना

[1] Consort of Shiva

माना? ड़ालना, रखना। तो कौन हुआ निमित्त? प्रजापिता। वो हुआ स्थापनाकारी ब्रह्मा पहला। वो हुई पालना करने वाली। वो हुई सारा पुरानापन, जितने भी विधर्मी, विदेशी हैं उन सबका विनाश करने वाली। अभी समझ में आ गया? चार मूर्तियाँ थी, या तीन मूर्तियाँ थी? तीन मूर्तियाँ ही थी। बाप अकेले नहीं आते हैं। कितनी मूर्तियों के साथ आते हैं? तीन मूर्तियों के साथ। अभी भी संसार में जब प्रैक्टिकल में प्रत्यक्षता होगी बाप के स्वरुप की, उस बाप का नाम क्या होगा? त्रिमूर्ति शिव बाप। तो तीन मूर्तियाँ एक साथ प्रत्यक्ष होंगी। ऐसे नहीं ब्रह्मा की मूर्ति भी होगी।

There were three personalities. One is living and the other is inert. The inert one has been named in the *avyakta vani*: nature (*prakriti*) is standing with brooms (*jhaaru*) in both hands at this time. What is her part? She plays a destructive part and who plays the part of sustenance? The junior mother, the Mother India plays the part of sustenance because the deity souls are going to be sustained only in India. Then who plays the part of establishment? Who is instrument in establishing the seed of knowledge? *Arey*, what is meant by establishing? To put, to lay. So, who was the instrument (*nimitt*)? Prajapita. He is the first Brahma to bring establishment. She (the junior mother) happens to be the one who sustains. And she (the senior mother) happens to be the destroyer of the entire oldness, all the *vidharmis*[2] and *videshis* (foreigners). Did you understand now that whether there were four personalities or three personalities? There were only three personalities. The Father does not come alone. With how many personalities does He come? He comes with three personalties. Even now when the Father's form is revealed in practice in the world, what will be the name of that Father? Trimurty Father Shiva. So, the three personalities will be revealed together. It is not that the personality of Brahma will also be present. .... (to be continued.)

Extracts-Part-2

समय 13.58-14.56

जिज्ञासु: बाबा, अलादीन का चिराग.... चिराग घिसो तो जिन हाजिर हो जाता है: बोल मेरे आका। तो वो कहाँ की बात है?

बाबा: किसी आत्मा की सेवा करने जाते हो तो चिराग जला करके जाते हो तो सफलता मिलेगी या चिराग बुझा हुआ होगा, देहभिमान में सुनायेंगे तो सफलता मिलेगी? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) यही अलाउद्दीन का चिराग है। अल्लाह माने ऊँचे ते ऊँचा, उद्दीन माना उड़ने वाला। ऊँचे ते ऊँची स्टेज में उड़ने वाला अल्लहउद्दीन। उनका नाम रखा है उर्दू में अल्लाह अव्वलदीन। ऐसा ऊँचे ते ऊँचा पार्टधारी, जो अव्वल नंबर दीन माना धर्म की स्थापना करता है।

[2] Those whose beliefs and practices are opposite to that set by the Father

Time: 13.58-14.56
Student: Baba, Alladin's lamp…. if the lamp is rubbed, the Genie appears [saying:] "Order my lord." So, when is it about?
Baba: When you go to serve some soul, will you get success if your lamp is lighted or will you get success if the lamp is extinguished and you narrate [the knowledge] in body consciousness? (Student said something.) This itself is the lamp (*ciraag*) of Alauddin. Allah means the highest; *uddin* means the one who flies (*urney vala*). Allahuddin, who flies in the highest stage. He has been named Allah Avvaldeen in Urdu. Such a highest actor, who establishes the No.1 *deen*, i.e. religion.

समय 15.10-17.49

जिज्ञासु: बाबा, जैसे बोला है मुरली में कि आत्मा की सुई की कट उतरने के बाद ही हम बाप से सन्मुख सुनते हैं। तो जब मुरली सुनते हैं या बाबा की याद में बैठते हैं तो नींद में झुटके आते हैं तो क्या हमारे पूर्व जन्मों के पाप हैं कि अभी से हो रहा है? और बताया कि अगर झुटके आते हैं क्लास में तो हजार गुणा पाप का भागी बन रहे है, पाप चढ़ रहा है, और एक तरफ बाबा कहते हैं कि सारी कट निकलने के बाद बाप के सन्मुख पढ़ते हैं।
बाबा: नींद जो आती है जिस समय निश्चयबुद्धि हुये थे उस समय नींद आती थी, या बाद में नींद आना शुरु हुई?
जिज्ञासु: बादमें।
बाबा: निश्चयबुद्धि होते हैं, समर्पणमय बुद्धि होते हैं, तो सतोप्रधान स्टेज में होते हैं। फिर बाद में धीरे-2 तमोप्रधान बनते जाते हैं।

Time: 15.10-17.49
Student: Baba, it has been said in the murli: we listen face to face from the Father only when the rust of the needle like soul is removed. So, if we doze off while listening to the murli or while sitting in Baba's remembrance, then does it mean that they are the sins of our past births or are we making them now? And it has been said that if you doze off in class, you accumulate thousand times sins; and on the other hand Baba says that you study face to face from the Father only after the entire *kat* (i.e. rust) is removed.
Baba: As regards sleep, did you used to feel sleepy when you had a faithful intellect or did you start sleeping later on?
Student: Later on.
Baba: When you have a faithful intellect, when your intellect is dedicated, then you are in a *satopradhan* stage. Then later on you go on becoming *tamopradhan* gradually.

जिज्ञासु: तो बाबा, ये हमारे पिछले पाप कर्मों का रील घूम रही है, या नये बन रहे हैं?
बाबा: पिछले जन्मों का जो पाप करते हैं उसका तो एक गुणा असर होता है, एक गुणा पाप चढ़ता है लेकिन अंजाम करने के बाद कि हमें बाप मिला है, हमने बाप को पहचाना है, हम बाप के बच्चे बने हैं जैसे चलायेगा हम वैसे चलेंगे। हमने जो पाना था, सो पा लिया। फिर उसके बाद, पहचानने के बाद, जानने के बाद, तन-मन-धन से अर्पण होने का संकल्प करने के

बाद, फिर अगर उल्टा काम करते हैं, उल्टा संकल्प करते हैं, उल्टी चलन चलते हैं, उल्टा वायब्रेशन बनाते हैं, श्रीमत के बरखिलाफ चलते है तो कितना गुणा बोझ चढ़ता है? (सभी-100 गुणा।) ऐसा किया है, या नहीं किया है? ज्ञान में आने के बाद किया है कि नहीं किया है? ऐसा किया है। तो बाबा का क्या दोष, ड्रामा का क्या दोष?

Student: So Baba, is this a reel of our past sins rotating or are we accumulating new sins?
Baba: The sins committed in the past births have one fold influence; they lead to accumulation of one fold sins. But after making a promise: we have found the Father, we have recognized the Father, we have become the Father's children, we will act as He wishes, we have found whatever we had to find. Then after that, after recognizing Him, after knowing Him, after resolving to dedicate through body, mind and wealth, if we perform an opposite task, if we create an opposite thought, if we act oppositely, if we create opposite vibrations, if we act against *shrimat*, then how much burden do we accumulate? (**Everyone said**: 100 times.) Have you done so or not? Have you done so after coming in knowledge or not? You have done so. So, what is Baba's fault [in this]? What is drama's fault?

दूसरा जिज्ञासु: झुटका तो अनजाने में आता है।
बाबा: ये सब अनजाने में आता है? पहले नहीं बताया कि ज्ञान में आने के बाद सौ गुणा बोझ चढ़ता है?
तीसरा जिज्ञासू:- खतम नहीं हो सकता है?
बाबा: खत्म होता है। बाप ही आकर के खतम करता है। आपे ही तरस परोई। मुझ निर्गुणहारे में कोई गुण नाहि। अहंकार भी तो खतम हो। अपने को निर्गुण मानते हैं? कि घड़ी-2 अहंकार आता है? "अरे, हम भी कुछ हैं। हम ऐसा कर देंगे, हम वैसा कर देंगे।"

Another Student: We doze off unknowingly.
Baba: Do you do all this unknowingly? Were you not told earlier that after entering the path of knowledge you accumulate hundred times sins?
Third Student: Can't it end?
Baba: It ends. The Father himself comes and ends it. 'You yourself show mercy on us. I am *nirgun* (devoid of virtues). I do not have any virtue.' The ego should also end. Do you consider yourself devoid of virtues? Or do you feel egotistic again and again? *"Arey*, we are also something. I will do this; I will do that".

समय 19.15-20.32

जिज्ञासु: बाबा के बच्चे बने, भट्ठी करके फिर भले विदेश में चले जायें तो भी विश्व का मालिक बन सकते हैं एक बार निश्चय करके।
बाबा: विश्व का मालिक बन सकते हैं?
जिज्ञासु: एक मुरली का पाइंट है ऐसे।
बाबा: हाँ, तो क्या हुआ?

जिज्ञासु: लेकिन बाबा ये भी कहा है कि अगर दो महीने भी बाबा से नहीं मिले, पत्र न लिखे तो वो बच्चा मर गया।

बाबा: मिलने की बात तो नहीं बताई। ये कहा कि अगर बाप से कनेक्शन नहीं है दो महीने तक तो बाप समझते हैं ये मर गया।

जिज्ञासु: तो एक बार निश्चय करके विदेश में चला गया तो ये कैसे लागू होगा?

बाबा: विदेश में चला जायेगा तो क्या आजकल टेलीफोन नहीं है? ईमेल नहीं आता जाता है? लेटर्स आना जाना नहीं होता है क्या? कनेक्शन रख सकता है कि नहीं? रख सकता है। ये तो मुये बच्चे हैं जो भट्ठी करी, और भट्ठी करने के बाद अपना अलग धंधा खोल करके बैठ जाते हैं। बाप से कोई कनेक्शन नहीं, मारे अहंकार के खुद ही बाप बनके बैठ गये। शिवोहम। कितनी-2 आत्माओं का अकल्याण कर देते हैं।

Time: 19.15-20.32
Student: If someone becomes Baba's child and go to foreign countries after undergoing *bhatti*, they can become the masters of the world once they have faith.
Baba: They become the masters of the world?
Student: Yes, there is a murli point like this.
Baba: So what?
Student: But Baba has also said that if you do not meet Baba for two months, if you do not write letter, then that child is dead.
Baba: No. It was not said about meeting. It was said that if there is no connection with the Father for two months, then the Father thinks that he has died.
Student: How is it applicable once he develops faith and goes abroad?
Reply: If he goes abroad, then is there not telephone nowadays? Aren't emails sent and received? Aren't letter sent and received? Can he keep a connection or not? He can. They are the dead children who open their own businesses (i.e. groups) after doing *bhatti.* They do not have any connection with the Father out of ego; they became Father themselves; *Shivoham* (I am Shiva). They bring harm to so many souls. ... (to be continued.)

Extracts-Part-3

समय 21.58-22.29

जिज्ञासु:- बाबा, एक मुरली में पाइंट आया है डरोपा।

बाबा:- डुरापा, डरोपा नहीं। डो रा पा। डुरापा माने जैसे किसीको उलहना दिया जाता है। "अरे, हमने जिंदगी में तुम्हारे साथ इतना भला किया, तुमने हमारा ऐसा कर दिया?" तो उलहना देना। डुरापा माना उलहना देना।

Time: 21.58-22.29
Student: Baba, there was a word in the murli: *daropa*.
Baba: It is *durapa*, not *daropa. Du ra pa. Durapa* means complaining against someone. "*Arey*, I benefited you throughout your life so much, and you did this to me!" So, to make a complaint. *Durapa* means to complain.

समय: 22.31- 25.00

जिज्ञासु: ज्ञान में चलते-चलते संकल्प विकल्प में बदल जाता है। उल्टा हो जाता है, ऐसा क्यों?

बाबा: क्यों? 63 जन्मों में अच्छे ही कर्म किए हैं क्या? 63 जन्मों में बुरे कर्म नहीं किए हैं क्या? (किसीने कहा-किये है।) तो बुरे कर्मों की रील नहीं घुमेगी संकल्पो में?

जिज्ञासु: जब बाप की याद करते हैं तो बुद्धि दूसरे किसी...।

बाबा: ये आपके हाथ में है ना। ये आपके हाथ में आपका भाग्य है। जब चाहें तब अच्छे से अच्छा भाग्य बनायें और जब चाहे तब खराब बनाऐं।

जिज्ञासु: संकल्प शक्ति जो होती है वो तो रोकने की चीज़ नहीं है।

बाबा: अच्छा! संकल्प जब एक बार खराब संकल्प चल जाते हैं तो चलते ही रहते है आप उसे रोकते नहीं है?

जिज्ञासु: रूकता है।

बाबा: रूकता है ना। तो ऐसे क्यों कहते हैं, कि रोकने की चीज़ नहीं है? बाप ने तो आपको ब्रेक दी है ना। पॉवरफुल ब्रेक है या कमजोर ब्रेक है?

जिज्ञासु: पॉवरफुल है।

बाबा: पॉवरफुल है। तो ऐसे क्यों कहते हैं रूकते ही नहीं?

दूसरा जिज्ञासु: घोड़ी भागने लगती है तो रूकती ही नहीं।

बाबा: रोक दो। ब्रेक पॉवरफुल होना चाहिए ना। ये शरीर रूपी रथ है, शरीर रूपी कार है। कार का ड्राइवर उसके हाथ में ब्रेक मजबूत होनी चाहिए ना। स्टॉप।

जिज्ञासु: संकल्प को रोकना है कि संकल्प ...?

बाबा: प्रैक्टिस नहीं कि है?

जिज्ञासु: रोकने के बाद भी तो संकल्प फिर से हो सकता है।

बाबा: रोकने के बाद संकल्प फिर हो सकता है, फिर रोक दो। अरे भाई, गढ्ढा आ गया या स्पीड ब्रेकर आ गया तो ब्रेक लगाते हैं ना। एक बार आ गया फिर थोड़ी देर बाद आ गया तो दुबारा ब्रेक नहीं लगायेंगे?

जिज्ञासु: तब तो फेल हो जाता है।

बाबा: तो ये जो ब्रेक फेल हो जाता है उस ब्रेक कि चेकिंग नहीं करनी है? चेकिंग करानी चाहिए ना। जिसका गाड़ी का ब्रेक फेल हो और वो गाड़ी आप सड़क पर चलाने लगें, महानगर में चलाने लगें तो क्या होगा? फौरन पकड़ा जाएगा।

Time: 22.31-25.00
Student: The thoughts change into opposite thought while following knowledge, it becomes opposite. Why does it happen so?
Baba: Why? Have you performed just good deeds in the 63 births? Haven't you performed bad deeds in 63 births? So, won't the reel of opposite actions rotate in the thoughts?
Student: When we remember Baba, the intellect [goes] to some other…
Baba: It is in your hand, isn't it? You fortune is in your hand. When you wish you can make your fortune good and when you wish you can make your fortune bad.
Student: The power of thoughts is not something that can be stopped.
Baba: *Accha!* When some bad thoughts arise once do they keep continuing? Don't you stop them?
Student: It stops.
Baba: It stops, doesn't it? Then, why do you say that it is not something which can be stopped? The Father has given you the *brake*, hasn't He? Is the *brake powerful* or weak?
Student: It is *powerful*.
Baba: When it is *powerful* then why do you say, it doesn't stop at all?
Another Student: [Once] the mare [like mind] starts to run it doesn't stop at all.
Baba: Stop it. The *brake* should be *powerful*, shouldn't it? This is a chariot like body, a car like body. The *brake* in the car driver's hand should be powerful, shouldn't it? Stop.
Student: Do we have to stop the thought or the thought....?
Baba: Haven't you done your practiced?
Student: The thoughts can arise even after being stopped.
Baba: If the thoughts can arise even after being stopped, then stop it again. *Arey!* brother, if there is ditch [on the road] or if a *speed breaker* [comes in front], you apply a *brake,* don't you? If it came once and it came again after sometime, won't you apply the *brake* again?
Student: It fails.
Baba: So, the *brake* which fails, shouldn't you check that *brake*? You should have it checked, shouldn't you? If the *brake* of a vehicle fails and you run that vehicle on the street, in the city then what will happen? You will be caught immediately.

समय 46.05-47.09

जिज्ञासु: बाबा, शिक्षा और दीक्षा में क्या अंतर है?

बाबा: शिक्षा पहले होती है या दीक्षा पहले होती है? पहले शिक्षा दी जाती है। शिक्षा देने के बाद फिर प्रैक्टिकल कराया जाता है। जब प्रैक्टिकल में मजबूत हो जाता है तब उसे दीक्षा कहा जाता है। दक्ष होना, दीक्षित होना, ट्रेन्ड़ होना। पहले ट्रेनिंग दी जाती है, या ट्रेनिंग देने से पहले पढ़ाई पढ़ाई जाती है? पहले पढ़ाई पढ़ाई जाती है। हाई स्कूल पास करो, इंटर पास करो, बी.ए. पास करो, एम.ए. पास करो फिर उसके बाद डिप्लोमा लेना होता है, कोई न कोई ट्रेनिंग

करनी होती है। तो ट्रेनिंग को कहते हैं दक्ष, दीक्षा होना। दीक्षित, दक्ष होना। दीक्षा बाद वाली चीज और शिक्षा पहले की बात है। ऊँची कौनसी हुई? दीक्षा ऊँची हो गई।

Time: 46.05-47.09

Student: Baba, what is the difference between *shiksha* and *deeksha*?

Baba: Does *shiksha* (education) take place first or does *deeksha* (training) take place first? First you are given education. After giving education you are made to do in practice. When you become strong in practical, then it is called *deeksha* (training). To become *daksh* (skilled), to become *dikshit* (accomplished), to become *trained*. Are you given the training first or are you taught knowledge before being *trained*? First the knowledge is taught. You have to pass high school (10^{th} class), inter (12^{th} class), BA (graduation), MA (post-graduation); and then you have to obtain a diploma or take some training. So, being trained is called being *daksh* (skilled), to have *deeksha* (training). To become accomplished (*dikshit, daksh*). *Deeksha* (training) comes later; and *shiksha* (education) comes first. Which is higher? *Deeksha* is higher. (Concluded.)

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.